जो बात मैं दिल में लई, सो हकें आगूं रखी बनाए।
इत काम बीच खुदाए के, काहूं दम ना मारयो जाए।।७७ ।।

जो मैंने अभी सोचा उसको श्री राजजी महाराज ने पहले से ही निश्चित कर रखा है। पारब्रह्म के काम में दखल देने का बल किसी का नहीं चलता।

हुकम साहेब का इन विध, सो लेत सबे मिलाए।
खावंदे बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ़ ना सके पाए।।७८ ।।

धनी का हुकम ही ऐसा है जो सबको अपने आप मिला लेता है। श्री राजजी महाराज ने पहले से ही निश्चित कर रखा है कि कब क्या होगा? इसलिए उससे कोई बाहर नहीं जा सकता।

अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर।
हुकम ऐसा कर छोड़या, काहूं करनी न पड़े फिकर।।७९ ।।

कुरान में श्री राजजी महाराज ने पहले ही से यह निश्चित करके लिखा है कि ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी। ऐसा इसलिए लिखवा दिया कि किसी को चिन्ता करने की आवश्यकता न पड़े।

महामत कहे सुनो मोमिनों, मौला अति बुजरक।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक।।८० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! सुनो श्री राजजी महाराज बड़ी महिमा वाले हैं। इनकी कृपा जिस पर हो जाती है उसे अपने चरणों में ले लेते हैं।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५७४ ।।

दोनामा किताब मंगलाचरण

अब कहूं विध निगम, देऊं महंमद की गम।
जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वेद, पुराणों की हकीकत और मुहम्मद की पहुंच बताती हूं जिससे मेरे-तेरे झगड़े मिट जाएं, अर्थात् हिन्दू-मुसलमान के झगड़े समाप्त हो जाएं और एक पारब्रह्म की पहचान हो जाए।

कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन होए सब एक।
छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख।। २ ।।

तारतम वाणी से सबके छिपे रहस्यों को खोलती हूं जिससे सारी दुनियां एक हो जाए और माया के भेषों के झगड़े समाप्त हो जाएं। इमाम मेंहदी साहब जागृत बुद्धि से सबके संशय मिटा देंगे। यही विशेषता है।

खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब।
पर पाया न काहूं भेद, ताथें रही सबों उमेद।। ३ ।।

बहुतों ने वेदों को पढ़-पढ़कर पारब्रह्म को खोजा और इसी तरह से कईयों ने कतेब को पढ़-पढ़कर खोजा। कोई भी उनके गुझ (गुप्त) रहस्यों के भेद नहीं पा सका, इसलिए सबको विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार आखिरी जमाने के इमाम मेंहदी साहब के आने का इन्तजार था जो सब ग्रन्थों के छिपे रहस्यों का भेद खोलकर बताएं।

Nijanand App

सास्त्र सबे जो ग्रन्थ, ताके करते थे अनरथ।
बिना इमाम न कोई समरथ, जो पट खोल के करे अर्थ।।४।।

आज तक सभी धर्मग्रन्थों के आचार्य अर्थ का अनर्थ करते थे, अर्थात् भटकाते थे। बिना इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के किसी के पास शक्ति नहीं थी जो इन रहस्यों को खोल सके।

हक नाहीं मिने सृष्ट सुपन, ढूंढ़या ला के लोकन।
जो जुलमत से उतपन, दई साख आप मुख तिन।।५।।

पारब्रह्म इस झूठे संसार में नहीं हैं। निराकार से पैदा जीवसृष्टि ने पारब्रह्म को यहां बहुत खोजा और अपने मुख से स्पष्ट कहा कि परमात्मा अगम है। उसके पास पहुंचा नहीं जा सकता।

कई खोज करी निगम, पर पाई नाहीं गम।
ए पैदा जिनके हुकम, सो पाया न किन खसम।।६।।

बहुतेरों ने वेदों को पढ़कर खोजा, परन्तु पारब्रह्म को नहीं पा सके। जिसके हुकम से सृष्टि बनी है, उसको आज तक किसी ने नहीं पाया।

कैयों ढूंढ़या चौदे भवन, ढूंढ़े चार मुक्त के जन।
नवधा के ढूंढ़े, भिंन भिंन, न कछु खबर त्रैगुन।।७।।

लोगों ने चौदह लोकों में ढूंढ़ा। कईयों ने चार प्रकार की मुक्ति सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य और नवधा की भक्ति से खूब खोजा, परन्तु पारब्रह्म नहीं मिले। यहां तक कि इस संसार के पैदा करने वाले, पालने वाले और मारने वाले त्रिदेव भी उसे नहीं पा सके।

महाप्रले होसी जब, सरगुन न निरगुन तब।
निराकार न सुंन, केहेवे को नाहीं वचन।।८।।

जब महाप्रलय होगा, तब यह सारा जगत, निराकार, शून्य कुछ भी नहीं रहेगा तथा सबको ज्ञान देने वाले शब्द भी नहीं रहेंगे।

नेत नेत कर तो गाया, जो ब्रह्म न नजरों आया।
जित देख्यो तित माया, तब नाम निगम धराया।।९।।

वेदों ने जब पारब्रह्म को नहीं पाया तो यहां नहीं, वहां नहीं, मुझे नहीं मिला, कह दिया। जहां-जहां भी खोजा उन्हें माया ही माया दिखाई दी और तब पारब्रह्म के पास न पहुंचने के कारण ही अपना नाम निगम रख लिया।

ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन वाचा रही इत हार।
ढूंढ़या कैयों कई प्रकार, पर चल्या न आगे विचार।।१०।।

यह निश्चित है कि पारब्रह्म इस संसार में नहीं हैं और उनका वर्णन करने में मन, वचन थक गए हैं। कईयों ने यहां कई तरह से खोजा और कोई निराकार से आगे नहीं जा सका।

कई अवतार किताबां कर, बहु ग्यानी कहावें तीर्थंकर।
औलिए अंबिए पैगंमर, हक की नाहीं काहूं खबर।।११।।

कई अवतारी पुरुषों ने अनेक ग्रन्थों की रचना कर डाली और बड़े-बड़े ज्ञानी तथा मुनिजन, तीर्थंकर नाम से जाने गए। मुसलमानों में भी औलिया, अंबिया, और पैगम्बर के नाम से जाने गए, परन्तु पारब्रह्म की खबर किसी को नहीं मिली।

Nijanand App

कह्या इतथें आगे सुंन, निराकार निरगुन।
भी कह्या निरंजन, ताथें अगम रह्या सबन।। १२ ।।

सबने यही कहा कि क्षर से आगे, शून्य से आगे, शून्य, निराकार, निरंजन, और निर्गुण बताया, इसीलिए उस पारब्रह्म तक कोई नहीं पहुंच पाया। वह अगम ही रहा।

कैयों ढूंढ़या होए दरवेस, फिरे जो देस विदेस।
पर पाया ना काहूं भेस, आगूं ला मकान कह्या नेस।। १३ ।।

कईयों ने साधु और फकीर का भेष धारण कर देश और विदेश में घूमकर खोजा। किसी भी भेष धारी ने परमात्मा को प्राप्त नहीं किया और अन्त में उन्होंने क्षर से आगे कुछ नहीं है, ऐसा कह दिया।

मंगलाचरन तमाम ।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ५८७ ।।

साखी–
दौड़ करी सिकंदरे, ढूंढ़या हैयाती आब।
बका अर्स पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब।। १ ।।

सिकन्दर बादशाह ने अखण्ड अमृत रस पाने के वास्ते बहुत खोज की, किन्तु निराकार को पार नहीं कर सका और परमधाम नहीं पा सका।

हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा न पाया किन।
तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुन।। २ ।।

कईयों ने ऊपर नीचे ढूंढ़ा, पर खुदा (पारब्रह्म) किसी को नहीं मिला। तब पारब्रह्म को निराकार निरंजन और शून्य कह दिया।

और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून।
कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून।। ३ ।।

मुसलमानों ने भी खुदा की सूरत नहीं है कहकर उसे बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून कह दिया।

इत थें आए महंमद, ल्याए फुरमान हकीकत।
देखाए खोल माएने, अर्स हक सूरत।। ४ ।।

अब उस अखण्ड परमधाम से रसूल साहब आए और हकीकत का ज्ञान कुरान लाए तथा इसके छिपे रहस्यों को खोलकर पारब्रह्म की अमरद (किशोर) सूरत का बयान किया।

मैं आया हक का हुकम, हक आएगा आखिरत।
कौल किया हकें मुझसों, मैं ल्याया हक मारफत।। ५ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मैं खुदा के हुकम से आया हूं और आखिर को खुद खुदा आएगा। खुदा ने आने का वायदा मेरे से किया है और उनकी पहचान के वास्ते मैं सब निशान लाया हूं।

उतरी अरवाहें अर्स से, रूहें बारे हजार।
और उतरी गिरो फरिस्ते, और कुंन से हुआ संसार।। ६ ।।

परमधाम से बारह हजार रूहें खेल में आई हैं। अक्षरधाम से ईश्वरीसृष्टि उतरी हैं। कुंन शब्द कहने से यह आम खलक (जीवसृष्टि) की उत्पत्ति हुई है।

Nijanand App